

## श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 11 अध्याय 4: भगवान् के अवतार

16 September 2026



राजा निमि ऋषियों से उन अद्भुत लीलाओं का वर्णन करने की प्रार्थना करते हैं जिन्हें भगवान् संसार में अपने अनेक अवतारों में करते हैं। ऋषि द्रुमिल भगवान् के अवतारों के एक विस्तृत स्मरण से उत्तर देते हैं — विराट् पुरुष तथा महान् त्रिदेव से लेकर, नर तथा नारायण होते हुए, राम और कृष्ण के प्रिय रूपों तक, और आगे आने वाले अवतारों तक।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विङ्गडम् में आपका स्वागत है, जो श्रीमद्भागवत महापुराण की पावन कथाओं तथा शिक्षाओं के माध्यम से एक भक्तिपूर्ण यात्रा है। यह सुनकर कि भगवान् की माया-शक्ति आत्मा को कैसे बाँधती है और प्रेममयी भक्ति उसे कैसे मुक्त करती है, राजा निमि अब उसी भगवान् की अनन्त करुणा को कर्म में सुनने की लालसा रखते हैं — वे अद्भुत लीलाएँ जिन्हें वे युग-युग में तब करते हैं जब संसार में अवतरित होते हैं। इस चतुर्थ प्रवचन में नौ योगीन्द्रों में से एक, ऋषि द्रुमिल, भगवान् के अवतारों का एक तेजस्वी स्मरण प्रस्तुत करते हैं: वे अवतार जो लोकों की रचना तथा पालन करते हैं, जो ऋषियों तथा पृथ्वी की रक्षा करते हैं, जो अभिमान को नत करते तथा पतितों का उद्धार करते हैं, और जो, समय पूर्ण होने पर, पृथ्वी का भार उतारते तथा युग के अन्त तक धर्म की रक्षा करते हैं।

## अध्याय को जानकारो

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 11 (एकादश स्कन्ध)
- अध्याय: 4 (चतुर्थ प्रवचन)
- अध्याय शीर्षक: द्रुमिल द्वारा भगवान् के अवतारों का वर्णन
- प्रधान वक्ता: ऋषि द्रुमिल, राजा निमि को उत्तर देते हुए; समस्त संवाद नारद द्वारा वसुदेव को स्मरण कराया गया तथा सुकदेव गोस्वामी द्वारा राजा परीक्षित को कहा गया
- प्रधान श्रोता: राजा निमि तथा उनकी सभा; ढाँचे के भीतर, वसुदेव तथा राजा परीक्षित
- मुख्य स्थान: प्राचीन अजनाभ (भारतवर्ष) में राजा निमि का यज्ञ-स्थल
- केन्द्रीय विषय: परम भगवान् के अवतार तथा वे अद्भुत लीलाएँ जो वे प्रत्येक में करते हैं, विराट् सृष्टि से लेकर युग के अन्त तक
- प्रधान श्लोक-सीमा: स्कन्ध 11, अध्याय 4, श्लोक 1-23
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

## पिछले अध्याय का सन्दर्भ

अध्याय 3 में, नौ योगीन्द्रों में से चार ने राजा निमि को भगवान् की माया-शक्ति के स्वरूप, सच्चे गुरु के आश्रय, अविनाशी आत्मा, तथा उस उपासना को प्रकट किया जो आत्मा को माया के पार ले जाती है। प्रसन्न होकर, राजा अब ऋषियों से उसी भगवान् की लीलाओं का वर्णन करने की प्रार्थना करते हैं जिनकी भक्ति की उन्होंने प्रशंसा की है — और ऋषि द्रुमिल उत्तर ग्रहण करते हैं।

## राजा निमि भगवान् की लीलाओं के विषय में पूछते हैं

राजा निमि ने ऋषियों से प्रार्थना की कि वे उन विविध लीलाओं का वर्णन करें जिन्हें श्रीहरि इस संसार में अपने विभिन्न अवतारों में, अपनी स्वतन्त्र इच्छा से धारण करते हुए करते हैं — वे लीलाएँ जो उन्होंने की हैं, अब कर रहे हैं, और आगे समय आने पर करेंगे (श्लोक 1)।

## द्रुमिल बोलते हैं — अगणित महिमा

ऋषि द्रुमिल ने विनय के एक वचन से आरम्भ किया। उन्होंने कहा कि भगवान् के अनन्त गुणों की गणना करने का प्रयास स्वयं ही अबोधता का प्रमाण है; पृथ्वी की असंख्य रज-कणिकाओं को गिन लेना भी सम्भव हो सकता है, किन्तु सर्वशक्तिमान् के गुणों का कोई अंत नहीं।

यो वा अनन्तस्य गुणाननन्ता-  
ननुक्रमिष्यन् स तु बालबुद्धिः ।  
रजांसि भूमेर्गणयेत् कथञ्चित्  
कालेन नैवाखिलशक्तिधाम्नः ॥ २ ॥

*yo vā anantasya guṇān anantān anukramiṣyan sa tu bāla-buddhiḥ rajāṁsi bhūmer gaṇayet  
kathañcit kālena naivākhila-śakti-dhāmnaḥ*

अर्थ: जो अनन्त भगवान् के असंख्य गुणों को गिनने का प्रयत्न करे, वह निश्चय ही बालबुद्धि है; कोई शायद, समय पाकर, पृथ्वी के धूलिकणों को गिन सके, परन्तु समस्त शक्तियों के आश्रय भगवान् के गुणों को कभी नहीं। (स्कन्ध 11, अध्याय 4, श्लोक 2)

## विराट् पुरुष तथा त्रिगुणमय भगवान्

जब भगवान् नारायण, प्रथम तथा सर्वोच्च देव, ने स्वयं विकसित तत्त्वों से इस विश्व को अपने शरीर के रूप में रचा, और अपने एक अंश से उसके अन्तर्यामी रूप में उसमें प्रवेश किया, तब वे पुरुष कहलाए। तीनों लोक उनका शरीर हैं; उनके अंगों से समस्त प्राणियों के अंग उत्पन्न होते हैं; स्वयं से वे चेतना हैं, और उनका प्राण संसार की समस्त शक्ति तथा क्रिया का स्रोत है।



भगवान् नारायण, प्रथम पुरुष, स्वयं विकसित तत्त्वों से इस विश्व को अपने शरीर के रूप में प्रकट करते हैं और उसमें उसकी अन्तरात्मा के रूप में प्रवेश करते हैं, पुरुष कहलाते हुए (श्लोक 3-5)।

सत्त्व, रजस् तथा तमस् गुणों के द्वारा, द्रुमिल ने आगे कहा, वही एक भगवान् सृष्टि, पालन तथा संहार के कर्ता बनते हैं। रजस् से युक्त होकर वे ब्रह्मा के रूप में रचना करते हैं; सत्त्व में वे विष्णु के रूप में विश्व का पालन, द्विजों में धर्म की रक्षा, तथा यज्ञों का फल प्रदान करते हैं; तमस् से युक्त होकर वे रुद्र के रूप में प्रलय लाते हैं। इन तीनों से प्रत्येक कल्प में समस्त प्राणियों की रचना, पालन तथा संहार होते हैं (श्लोक 3-5)।

## नर तथा नारायण

भगवान् परम शान्त युगल ऋषि नर तथा नारायण के रूप में भी अवतरित हुए, जो दक्ष की पुत्री तथा धर्म की पत्नी मूर्ति से उत्पन्न हुए। इन दोनों ने आत्मज्ञान की ओर ले जाने वाले कर्म-मार्ग का उपदेश किया तथा स्वयं भी उसका आचरण किया, और उनके चरण आज भी श्रेष्ठ ऋषियों द्वारा पूजित हैं।

धर्मस्य दक्षदुहितर्यजनिष्ठ मूर्त्या  
नारायणो नर ऋषिप्रवरः प्रशान्तः ।  
नैष्कर्म्यलक्षणमुवाच चचार कर्म  
योऽद्यापि चास्त ऋषिवर्यनिषेविताङ्घ्रिः ॥ ६ ॥

*dharmasya dakṣa-duhitary ajaniṣṭa mūrtyāṁ nārāyaṇo nara ṛṣi-pravarah praśāntaḥ naiṣkarmya-lakṣaṇam uvāca cacāra karma yo 'dyāpi cāsta ṛṣi-varya-niṣevitāṅghriḥ*

अर्थ: नारायण तथा नर के रूप में, ऋषियों में श्रेष्ठ तथा परम शान्त, भगवान् ने धर्म की पत्नी, दक्ष की पुत्री मूर्ति से जन्म लिया; उन्होंने उस कर्म का उपदेश किया तथा आचरण भी किया जो कर्म से मुक्ति की ओर ले जाता है, और आज भी वे विराजमान हैं, उनके चरण श्रेष्ठ ऋषियों द्वारा सेवित हैं। (स्कन्ध 11, अध्याय 4, श्लोक 6)



शान्त ऋषि नर तथा नारायण, भगवान् के एक अवतार, उस मार्ग का आचरण तथा उपदेश करते हैं जो कर्म से परे ले जाता है, उनके चरण श्रेष्ठ ऋषियों द्वारा सम्मानित हैं (श्लोक 6)।

## बदरिकाश्रम में अभिमान का नाश

यह सन्देह करके कि ऋषि नारायण उनके स्वर्ग-राज्य की कामना करते हैं, इन्द्र ने कामदेव को उसके अनुचरों, अप्सराओं, मन्द समीर तथा वसन्त के साथ बदरिकाश्रम भेजा कि वे ऋषि के मन को विचलित करें। उनकी शक्ति से अनजान, उन्होंने स्त्रियों के कटाक्षों से उन्हें डिगाने का प्रयत्न किया। इन्द्र की चेष्टा जानकर, नारायण बिना विस्मय अथवा अभिमान के हँसे, और काँपते आगन्तुकों को आश्वस्त किया, उन्हें निर्भय रहने तथा उनका आतिथ्य स्वीकार करने को कहा।



बदरिकाश्रम में, शान्त ऋषि नारायण, कामदेव के विचलित करने के प्रयत्नों से अविचल, नत हुए देवताओं को कृपापूर्वक आश्वस्त करते हैं और अनुपम, तेजस्वी सौन्दर्य की स्त्रियों को प्रकट करते हैं (श्लोक 7-16)।

तब, अपने ही अंग से, भगवान् ने अद्भुत सौन्दर्य की स्त्रियों को प्रकट किया, अलंकृत तथा तेजस्वी, जो स्वयं उनकी सेवा में थीं; उनके अनुपम सौन्दर्य के सामने अप्सराओं ने अपना सौन्दर्य फीका पाया, और कामदेव तथा उसके अनुचरों का अभिमान नत हो गया। नारायण ने कृपापूर्वक उन्हें स्वर्ग के लिए एक ऐसी स्त्री चुनने को कहा; उन्होंने उर्वशी को चुना और लौट गए, इन्द्र को नमन करके तथा भगवान् की सामर्थ्य का वर्णन करके, जिसे सुनकर इन्द्र विस्मित तथा खिन्न हुआ (श्लोक 7-16)।

### भगवान् के अवतारों की माला

द्रुमिल ने तब अवतारों की एक माला का स्मरण किया। लोकों के कल्याण के लिए भगवान् दिव्य हंस के रूप में, दत्तात्रेय के रूप में, चार ऋषियों सनक, सनन्दन, सनातन तथा सनत्कुमार के रूप में, तथा उनके अपने पिता ऋषभ के रूप में प्रकट हुए, आत्मज्ञान का उपदेश करते हुए; हयग्रीव के रूप में उन्होंने असुर मधु का वध किया तथा वेदों को पुनः प्राप्त किया। दिव्य मत्स्य के रूप में उन्होंने प्रलय के समय मनु तथा पृथ्वी की रक्षा की; वराह के रूप में उन्होंने पृथ्वी को समुद्र से उठाया तथा असुर का वध किया; कूर्म के रूप में उन्होंने समुद्र-मन्थन के समय मन्दराचल को धारण किया, और उन्होंने गजराज को ग्राह से बचाया। उन्होंने लघुकाय वालखिल्य ऋषियों को बचाया तथा इन्द्र को पाप से मुक्त किया।



द्रुमिल भगवान् के अनेक अवतारों का स्मरण करते हैं — मत्स्य, कूर्म, वराह तथा नृसिंह, वामन, परशुराम तथा श्रीराम — प्रत्येक लोकों की रक्षा के लिए अद्भुत लीलाएँ करते हुए (श्लोक 17-21)।

नृसिंह के रूप में उन्होंने अपने भक्तों को भय से मुक्त करने हेतु हिरण्यकशिपु का वध किया; देवासुर संग्रामों में उन्होंने असुर-प्रमुखों का संहार किया; वामन के रूप में उन्होंने बलि से पृथ्वी प्राप्त की तथा देवताओं को दी। परशुराम के रूप में अवतरित होकर, उन्होंने अनेक बार पृथ्वी को अधर्मी शासकों से रहित किया; और सीता के प्रिय श्रीराम के रूप में उन्होंने समुद्र पर सेतु बाँधा, दशमुख असुर तथा उसकी लंका का संहार किया, और सदा सर्वत्र विजयी रहते हैं, उनकी कीर्ति सुनने वालों के पापों को नष्ट करती है (श्लोक 17-21)।

### यदुवंश में अवतार, तथा उससे आगे

यद्यपि अजन्मा, द्रुमिल ने कहा, भगवान् यदुवंश में प्रकट होंगे कि पृथ्वी का भार उतारें तथा ऐसी लीलाएँ करें जो देवताओं की सामर्थ्य से भी परे हैं; और वे युग के अन्त तक धर्म की रक्षा करेंगे।

भूमेर्भरावतरणाय यदुष्वजन्मा  
जातः करिष्यति सुरैरपि दुष्कराणि ।  
वादैर्विमोहयति यज्ञकृतोऽतदर्हान्  
शूद्रान् कलौ क्षितिभुजो न्यहनिष्यदन्ते ॥ २२ ॥

*bhūmer bharāvataṛaṇāya yaduṣv ajanmā jātaḥ kariṣyati surair api duṣkarāṇi vādair vimohayati yajña-kṛto 'tad-arhān śūdrān kalau kṣiti-bhujo nyahaniṣyad ante*

अर्थ: पृथ्वी का भार उतारने के लिए, अजन्मा भगवान् यदुवंश में जन्म लेंगे तथा ऐसी लीलाएँ करेंगे जो देवताओं के लिए भी दुष्कर हैं; वे अपने उपदेशों से उन अयोग्य मनुष्यों को मोहित करेंगे जो बिना अधिकार के यज्ञ करते हैं, और कलियुग के अन्त में अधर्मी शासकों का संहार करेंगे। (स्कन्ध 11, अध्याय 4, श्लोक 22)



अजन्मा भगवान् पृथ्वी का भार उतारने हेतु यदुवंश में अवतरित होंगे, और युग के अन्त में पुनः आकर धर्मियों की रक्षा तथा अधर्मियों का संहार करेंगे (श्लोक 22)।

विश्व के स्वामी भगवान् के, अपार महिमा वाले, ऐसे अनेक अवतार तथा लीलाएँ, द्रुमिल ने निष्कर्ष दिया, ज्ञानियों द्वारा वर्णित की गई हैं (श्लोक 23)।

## इस अध्याय की प्रधान शिक्षाएँ

1. भगवान् की महिमा अनन्त है। पृथ्वी की धूल शायद पहले गिनी जा सके, अनन्त भगवान् के गुण नहीं — यह स्मरण कि हमारी स्तुति, चाहे कितनी ही सच्ची हो, उनकी महानता के केवल किनारे को छूती है (श्लोक 2)।
2. एक भगवान्, त्रिविध कार्य। सत्त्व, रजस् तथा तमस् के द्वारा, वही एक भगवान् ब्रह्मा रूप में रचते, विष्णु रूप में पालते, तथा रुद्र रूप में संहार करते हैं — समस्त सृष्टि-क्रम उनका ही एक अखण्ड कार्य है (श्लोक 3-5)।
3. भगवान् शिक्षा को जीकर उसका उपदेश देते हैं। नर तथा नारायण के रूप में वे केवल कर्म से परे के मार्ग का उपदेश नहीं देते; वे स्वयं उसका आचरण करते हैं, यह दिखाते हुए कि सच्ची शिक्षा जीवन में उतरी होती है (श्लोक 6)।
4. दिव्य शान्ति समस्त अभिमान को नत करती है। कामदेव के प्रहार से अविचल, भगवान् अभिमान को बल से नहीं अपितु अपनी सहज महिमा से नत करते हैं, और फिर नत हुआ पर कृपा करते हैं (श्लोक 7-16)।
5. अवतार करुणा के कर्म हैं। मत्स्य से लेकर श्रीराम तक, और यदुवंश में अवतार तक, प्रत्येक अवतार उद्धार करता, रक्षा करता तथा धर्म की पुनर्स्थापना करता है — भगवान् समस्त प्राणियों के कल्याण के लिए बार-बार संसार में आते हैं (श्लोक 17-22)।

## एक भाक्तेपूर्ण चिन्तन

भगवान् के अवतारों को, एक के बाद एक, केवल स्मरण करने में — जैसा द्रुमिल यहाँ करते हैं — एक विशेष आनन्द है। यह अध्याय तर्क या विश्लेषण उतना नहीं करता जितना प्रेमपूर्वक कीर्तन — और उस कीर्तन में कुछ प्रज्वलित होता है। हमें स्मरण कराया जाता है कि वही भगवान् जो पिछले अध्याय की अविनाशी आत्मा हैं, मन तथा वाणी की पहुँच से परे, वही हैं जो पृथ्वी को अपने कन्धों पर उठाते हैं, जो पर्वत को धारण करते हैं, जो जल से पुकारते गजराज का उद्धार करते हैं, जो काँपते आगन्तुकों को आश्वस्त करते और निर्भय रहने को कहते हैं। द्रुमिल का आरम्भिक स्वीकार — कि भगवान् के गुण पृथ्वी की धूल से अधिक गिने नहीं जा सकते — निराशाजनक नहीं अपितु मुक्तिदायी है। हमसे अनन्त को समझने को नहीं कहा जाता; हमें केवल स्मरण करने का निमन्त्रण है, और प्रत्येक स्मरण की गई लीला को हृदय को उस एक की ओर थोड़ा और निकट खींचने देने का जो उन सबको प्रेमवश करते हैं।

## एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज, कुछ शान्त क्षण लेकर इस अध्याय में वर्णित भगवान् के किसी एक अवतार का स्मरण करें — शायद पर्वत को धारण करते कूर्म का, अथवा समुद्र पर सेतु बाँधते श्रीराम का, अथवा बदरिकाश्रम में भगवान् की करुणा का। उस दृश्य को कृतज्ञता से मन में धारण करें, और उसे यह स्मरण कराने दें कि भगवान् समस्त प्राणियों के कल्याण हेतु बार-बार संसार में आते हैं। चिन्तन करते हुए धीरे से जपें: “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।” स्मरण के इस सरल कर्म को, जैसा द्रुमिल दिखाते हैं, स्वयं उपासना का एक रूप बनने दें।

## उपसंहार

एकादश स्कन्ध का चतुर्थ प्रवचन भगवान् के अवतारों का एक प्रेमपूर्ण स्मरण है, जिसे ऋषि द्रुमिल राजा निमि के उत्तर में प्रस्तुत करते हैं। इस विनम्र सत्य से आरम्भ करते हुए कि भगवान् के गुण कभी पूर्णतः गिने नहीं जा सकते, द्रुमिल वही एक भगवान् के सृष्टि, पालन तथा संहार के त्रिविध कार्य का वर्णन करते हैं; नर तथा नारायण के रूप में उनके अवतार का, जो उसी मार्ग को जीते हैं जिसका वे उपदेश देते हैं; बदरिकाश्रम में अभिमान के सहज नाश का; और उनके अवतारों की लम्बी माला का — मत्स्य, कूर्म, वराह तथा नृसिंह, वामन, परशुराम तथा श्रीराम — जो यदुवंश में उनके प्रतिज्ञात अवतार में परिणत होती है, पृथ्वी का भार उतारने तथा युग के अन्त तक धर्म की रक्षा करने के लिए। प्रत्येक रूप में एक ही सत्य बहता है: भगवान्, बार-बार, असीम करुणा से संसार में आते हैं। ज्यों-ज्यों राजा निमि की जिज्ञासा जारी रहती है, अगला प्रवचन उन रीतियों की ओर मुड़ेगा जिनसे भगवान् संसार के विभिन्न युगों में पूजे जाते हैं।

श्रीमद्भागवतम् की दिव्य वाणी हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जागृत करे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

## सन्दर्भ तथा आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण), एकादश स्कन्ध, अध्याय 4, पृष्ठ 530-533।
- श्रृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज़डम • बिस्वा सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।

- पंडित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र की आध्यात्मिक मार्गदर्शन तथा अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, निष्ठावान पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण में दिखाए गए हैं तथा उनके अर्थ सार-रूप में दिए गए हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद अथवा टीका की पुनरावृत्ति नहीं है। किसी भी प्रकाशक से सम्बद्धता अथवा समर्थन का कोई संकेत नहीं है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: [kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-skandh-11-adhyay-4-drumil-bhagavan-ke-avatar-hi.html](http://kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-skandh-11-adhyay-4-drumil-bhagavan-ke-avatar-hi.html)

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

